बौद्ध धर्म का इतिहास

रूचि यादव
डॉ0 कामना शुक्ला
कृपालु महिला महाविद्यालय,
कुण्डा प्रतापगढ़

मगध तथा राज्यों में पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार में बौद्ध धर्म का उदय और विकास हुआ। बुद्ध का अधिकांश समय बिहार में बीता तथा मृत्यु के उपरान्त राजगृह वैशाली व पाटलिपुत्र में क्रमशः तीन बौद्ध संगीतियाँ सम्पन्न हुई। लगभग 700 ई0पू0 में उत्तर प्रदेश के लोगो के भौतिक जीवन में क्रांति का मुख्य कारण था। इसके काल में लोहे का प्रयोग प्रारंभ हुआ।

बौद्ध के सामान्य अनुयायियों के लिये निश्चित नियम तथा शिक्षायें नवीन परिवर्तनों को पूर्ण रूप से ध्यान में रखती थी और उन्हें वैचाारिक रूप से उपासकों के दैनिक आचरण में गौतम बुद्ध अहिंसा का पालन सर्वाधिक महत्व देते यह कहा जाता है कि उपासक को पाँच यज्ञों को सम्पन्न करना चाहिये सम्बंधियों के लिये अतिथियों तथा पितरों के लिये राजा और देवताओं के लिये, इसके अतिरिक्त एक गृहस्थों से अपने गोत्र परिवार मित्रों दासों के लिये एवं किराये के मजदूरों की सहायता तथा स्वयं की रक्षा के लिये भी कहा गया कि शिल्पों को सीखना गृहस्थों का एक बराबर संस्तुत महत्वपूर्ण कर्तव्य है।

बौद्ध धर्म की उत्पत्ति

छठीं शताब्दी ई0पू0 का उदय हुआ। बौद्ध धर्म गंगा घाटी के मैदानों में अनेक सम्प्रदायों का उदय हुआ। बौद्ध ग्रंथ ब्रह्मजाल सूत्र में 62 तथा जैन ग्रन्थ सूत्रकृतांग 368 बतायी गयी है।

इन सभी आन्दोलनों में बौद्ध एवं जैन सर्व प्रमुख थे। इसी समय विश्व के अनेक देशों में भी बौद्धिक आन्दोलन के प्रमाण मिलते हैं।

चीन में कन्फूशियस ईरान में जरथ्रुष्ट, यूनान में पाइथागोरस जैसे धर्म का उदय हुआ। इसी समय छठी शताब्दी ई0पू0 में भारत बौद्ध तथा जैन धर्म की उत्पत्ति हुई।

बौद्धधर्म के उद्भव के कारण

बौद्ध धर्म के उद्भव के निम्न कारण थेः–

1. वैदिक धर्म में यज्ञिक कर्मकाण्डों का प्रचलन था।

2. संस्कृत भाषाओं का प्रयोग किया जाता था इसलिये जनसाधारण बौद्ध की ओर अधिक ध्यान केंद्रित हुये।

बौद्ध धर्म के संस्थापक

बौद्ध धर्म प्रवर्तक गौतम बुद्ध का जन्म वैशाख मास के पुष्य नक्षत्र तथा वृष राशि में हुआ। बुद्ध के जन्म से पूर्व उनकी माता ने एक स्वप्न देखा कि एक श्वेत हाथी ने जिसकी सूँड़ में कमल था। उनके गर्भ में प्रवेश किया (सिंघली परंपरा के अनुसार 624 ई0पू0 में) 563 ई0पू0 में हुआ।

इनका जन्म नेपाल की तराई में स्थित रूम्मिनदेई ग्राम के आम्र कुंज में शाल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था। इसका प्रमाण मौर्य सम्राट अशोक का रूम्मिनदेई अभिलेख है।

बुद्ध के जन्म के कुछ समय बाद ही उनके महापुरुषों के 32 लक्षणों का दर्शन किया गया। गौतम के जन्म के समय कालदेवल कौडिन्य तथा ऋषि अतिश ने यह भविष्यवाणी की कि सिद्धार्थ चक्रवर्ती सम्राट बनेगा या संन्यासी बनेगा। बुद्ध के जन्म के सात दिन पश्चात् उनकी माता महामाया का देहान्त हो गया। 16 वर्ष की आयु में बुद्ध का विवाह शाक्य कुल की कन्या यशोधरा से हुआ। विवाह के 12 वर्ष पश्चात् सिद्धार्थ को राहुल नामक पुत्र प्राप्त हुआ। मंजिम निकाय के अनुसार एक दिन जब सिद्धार्थ अपने सारथी छन्दक के साथ नगर भ्रमण कर रहे थे, तब उन्होनें मार्ग में क्रमशः चार दृश्य देखेः–

दैनिक आचरण में गौतम बुद्ध अहिंसा का पालन सर्वाधिक महत्व देते यह कहा जाता है कि उपासक को पाँच यज्ञों को सम्पन्न करना चाहिये।

राजगृह वैशाली व पाटलिपुत्र में क्रमशः तीन बौद्ध संगीतियाँ सम्पन्न हुई। लगभग 700 ई0पू0 में उत्तर प्रदेश के लोगो के भौतिक जीवन में क्रांति का मुख्य कारण था।

1. जर्जर शरीर युक्त वृद्ध व्यक्ति
2. व्यवस्था पूर्ण रोगी
3. मृत व्यक्ति
4. प्रसन्न मुद्रा में सन्यासी

धर्म चक्र प्रर्वतन

गृहत्याग का प्रधान कारण था उनकी चिन्तनशील प्रवृत्ति तथा दुःख से जलते संसार सुरक्षा का उपर्युक्त उपाय खोज निकालना। सांसारिक दुःखों से द्रवित होकर सिद्धार्थ ने 29 वर्ष आयु में अपनी पत्नी व पुत्र को शयनावस्था मे छोड़कर अपने घोड़े कन्थक तथा छन्दक के साथ गृह त्याग दिया। गृह त्याग की इस घटना को महाभिनिष्क्रमण कहा जाता है। सर्वप्रथम अनोमा नदी पर उन्होंने अपने राजसी वस्त्र त्याग दिये और सिर मुड़वाकर भिक्षु वस्त्र धारण किये।

गृह त्याग के पश्चात् गौतम ने वैशाली में सांख्यदर्शन के आचार्य अलारकलाम को अपना प्रथम गुरू बनाया। तत्पश्चात् गौतम ने पांच ब्राह्मणों ने बुद्ध पर तपस्या मार्ग आरोप लगाया तथा बुद्ध का साथ छोड़कर ऋषिपत्तन के मृगदाव (सारनाथ) आ गये।

तत्पश्चात् गौतम ने (35 वर्ष की आयु में) उरूवेला में ही निरंजना नदी (आधुनिक फल्गू या लिलाजन नदी अन्य नाम) तट पर न्यग्रोथ वृक्ष के नीचे समाधि लगाई अन्तिम दिन की रात्रि के तीन यामों में उन्होंने तीन पूर्व जन्म स्मृति रूप दिव्य चक्षु तथा प्रतीस समुत्पाद का ज्ञान प्राप्त की।